रिपोर्ट समारोह -3

महाराजा दाहिर सेन सप्त सिंधु काव्य उत्सव

19,20, 21 जून 2021

महाराजा दाहिर सेन सप्त सिंधु काव्य उत्सव 19,20, 21 जून 2021 को करवाया गया।इसके पहले दिन मुख्य अतिथि डॉ रोशन लाल शर्मा, कुलपति हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला रहे। इसके साथ ही बीच भाषण प्रोफेसर कपिल कपूर, पूर्व चांसलर हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा ने दिया। इसमें अध्यक्षता प्रोफेसर हरेराम त्रिपाठी, कुलपति, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी थे | विशेष अतिथि स. सतनाम सिंह निज्जर, चेयरमैन स. उत्तम सिंह निज्जर फाउंडेशन के रूप में शामिल हुवे| दुसरे दिन मुख्य अतिथि स. सुखी बाठ,संथापक पंजाब भवन कनाडा थे | विषेश अतिथि डॉ. मनमोहन आईपीएस और तीसरे दिन के कार्यक्रम की अधिअक्ता स. गुरभजन सिंह गिल ने की। इसमें मुख्य अतिथि डॉ जगबीर सिंह जी, दिल्ली यूनिवर्सिटी,दिल्ली थे। विशिस्ट अतिथि डा मदव कोशिक उप चेयरमैन भारतीय साहित अकादमी रहे। इस में 131 लोगों ने भाग लिया।

अध्यक्ष, पंजाबी एवं डोगरी विभाग
Head, Department of Punjabi & Dogri
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला-176215
Dhauladhar Parisar-1 Dharamshala-176215

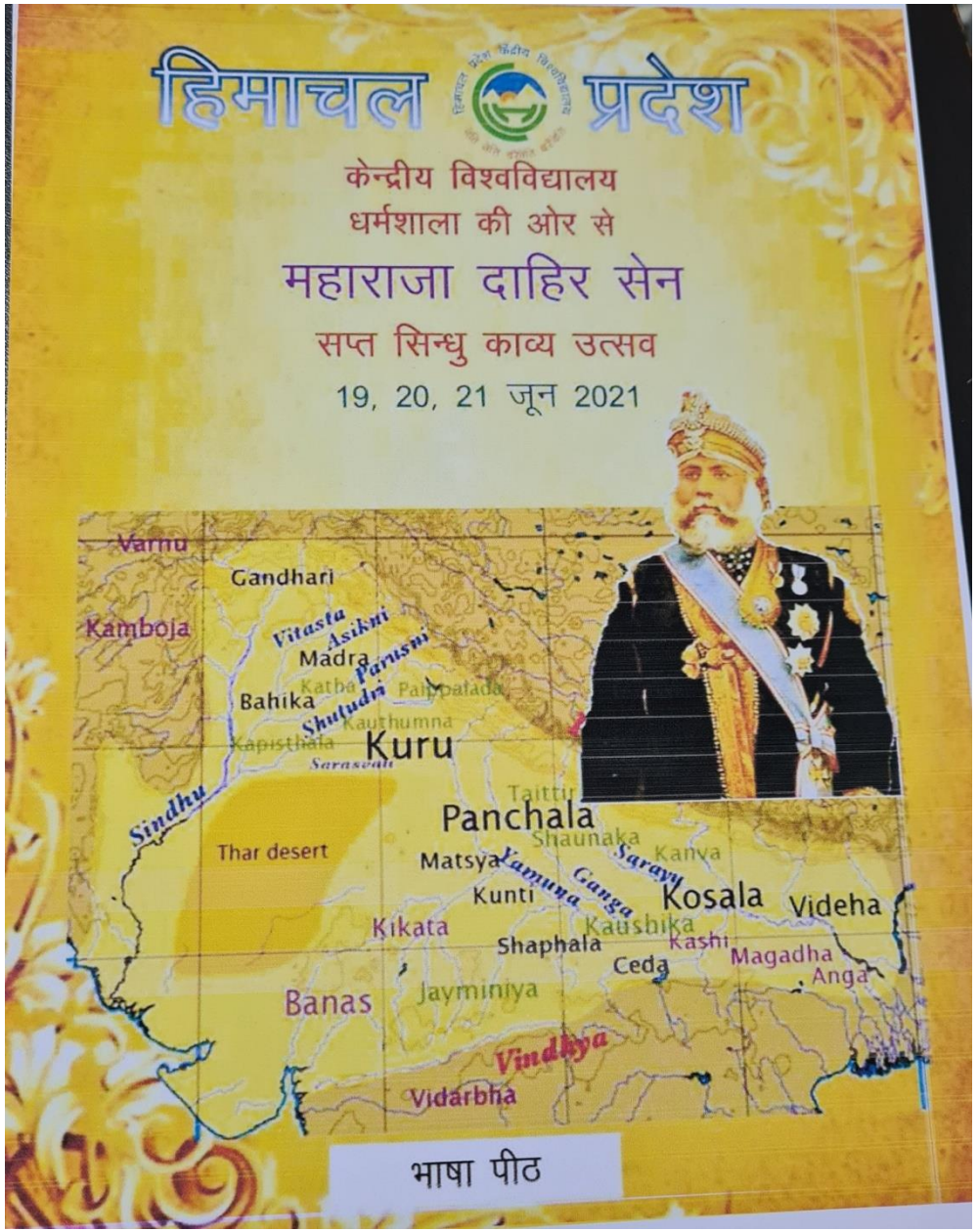

3 समारोह

19,20,21 June 2021 को दूसरी बार महाराजा दाहिर सेन सप्त सिंधु काव्य उत्सव केन्द्रीय विश्वविध्यालय हिमाचल प्रदेश के पंजबी एव डोगरी विभाग द्वारा मनाया गया।

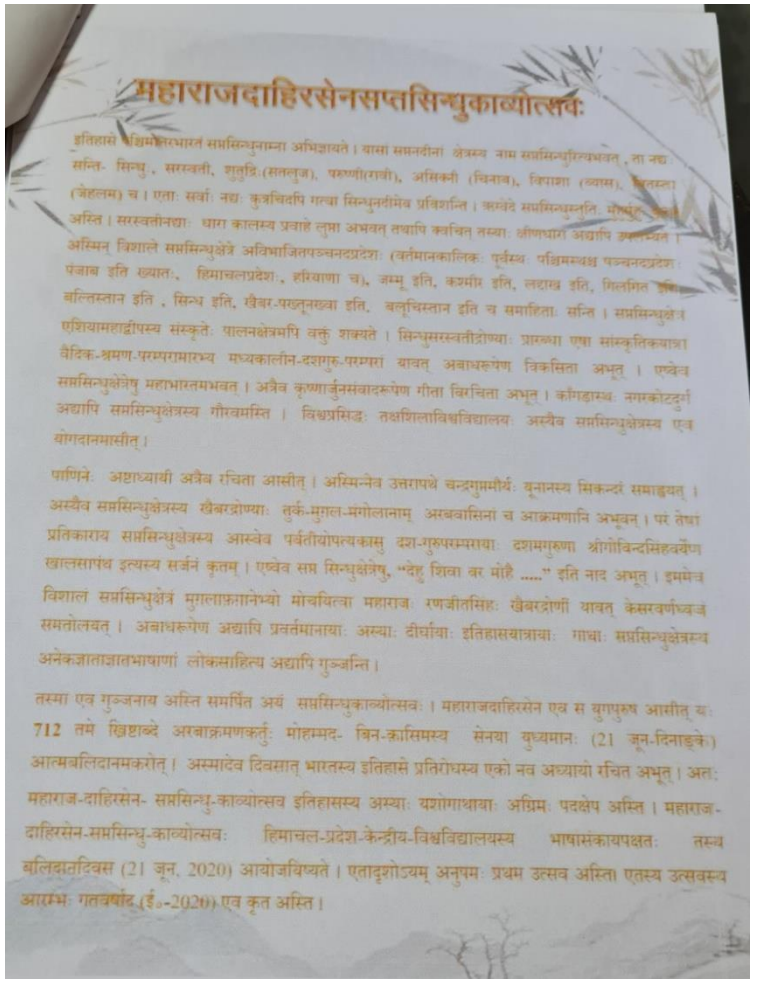

महाराजदाहिरसेनसप्तसिन्धुकाव्योत्सवः

इतिहासे पश्चिमोत्तरभारतं सप्तसिन्धुनाम्ना अभिज्ञायते। यासां सप्तनदीनां क्षेत्रस्य नाम सप्तसिन्धुरित्यभवत्, ता नद्यः सन्ति- सिन्धुः, सरस्वती, शुतुद्रिः(सतलुज), परुष्णी(रावी), असिक्नी (चिनाब), विपाशा (व्यास), वितस्ता (जेहलम) च। एताः सर्वाः नद्यः कुत्रचिदपि गत्वा सिन्धुनदीमेव प्रविशन्ति। ऋग्वेदे सप्तसिन्धुस्तुतिः मुहुर्मुहुः कृता अस्ति। सरस्वतीनद्याः धारा कालस्य प्रवाहे लुप्ता अभवत् तथापि क्वचित् तस्याः क्षीणधारा अद्यापि दृश्यते। अस्मिन् विशाले सप्तसिन्धुक्षेत्रे अविभाजितपञ्चनदप्रदेशः (वर्तमानकालिकः पूर्वस्थः पश्चिमस्थश्च पञ्चनदप्रदेशः पंजाब इति ख्यातः, हिमाचलप्रदेशः, हरियाणा च), जम्मू इति, कश्मीर इति, लद्दाख इति, गिलगित इति, बल्तिस्तान इति, सिन्ध इति, खैबर-पख्तूनख्वा इति, बलूचिस्तान इति च समाहिताः सन्ति। सप्तसिन्धुक्षेत्रं एशियामहाद्वीपस्य संस्कृतेः पालनक्षेत्रमपि वक्तुं शक्यते। सिन्धुसरस्वतीद्रोण्याः प्रारब्धा एषा सांस्कृतिकयात्रा वैदिक-श्रमण-परम्परामारभ्य मध्यकालीन-दशगुरु-परम्परां यावत् अबाधरूपेण विकसिता अभूत्। एष्वेव सप्तसिन्धुक्षेत्रेषु महाभारतमभवत्। अत्रैव कृष्णार्जुनसंवादरूपेण गीता विरचिता अभूत्। कांगडास्थः नगरकोटदुर्गः अद्यापि सप्तसिन्धुक्षेत्रस्य गौरवमस्ति। विश्वप्रसिद्धः तक्षशिलाविश्वविद्यालयः अस्यैव सप्तसिन्धुक्षेत्रस्य एव योगदानमासीत्।

पाणिनेः अष्टाध्यायी अत्रैव रचिता आसीत्। अस्मिन्नेव उत्तरापथे चन्द्रगुप्तमौर्यः यूनानस्य सिकन्दरं समाह्वयत्। अस्यैव सप्तसिन्धुक्षेत्रस्य खैबरद्रोण्याः तुर्क-मुगल-मंगोलानाम् अरबवासिनां च आक्रमणानि अभूवन्। परं तेषां प्रतिकाराय सप्तसिन्धुक्षेत्रस्य आस्वेव पर्वतीयोपत्यकासु दश-गुरुपरम्परायाः दशमगुरुणा श्रीगोविन्दसिंहवर्येण खालसापंथ इत्यस्य सर्जनं कृतम्। एष्वेव सप्त सिन्धुक्षेत्रेषु, "देहु शिवा वर मोहि ....." इति नाद अभूत्। इममेव विशालं सप्तसिन्धुक्षेत्रं मुगलाफगानेभ्यो मोचयित्वा महाराजः रणजीतसिंहः खैबरद्रोणीं यावत् केसरवर्णध्वजं समतोलयत्। अबाधरूपेण अद्यापि प्रवर्तमानायाः अस्याः दीर्घायाः इतिहासयात्रायाः गाथाः सप्तसिन्धुक्षेत्रस्य अनेकज्ञाताज्ञातभाषाणां लोकसाहित्ये अद्यापि गुञ्जन्ति।

तस्मा एव गुञ्जनाय अस्ति समर्पित अयं सप्तसिन्धुकाव्योत्सवः। महाराजदाहिरसेन एव स युगपुरुष आसीत् यः 712 तमे ख्रिष्टाब्दे अरबाक्रमणकर्तुः मोहम्मद- बिन-क़ासिमस्य सेनया युध्यमानः (21 जून-दिनाङ्के) आत्मबलिदानमकरोत्। अस्मादेव दिवसात् भारतस्य इतिहासे प्रतिरोधस्य एको नव अध्यायो रचित अभूत्। अतः महाराज-दाहिरसेन- सप्तसिन्धु-काव्योत्सव इतिहासस्य अस्याः यशोगाथायाः अग्रिमः पदक्षेप अस्ति। महाराज-दाहिरसेन-सप्तसिन्धु-काव्योत्सवः हिमाचल-प्रदेश-केन्द्रीय-विश्वविद्यालयस्य भाषासंकायपक्षतः तस्य बलिदानदिवसे (21 जून, 2020) आयोजयिष्यते। एतादृशोऽयम् अनुपमः प्रथम उत्सव अस्ति। एतस्य उत्सवस्य आरम्भः गतवर्षाद (ई॰-2020) एव कृत अस्ति।

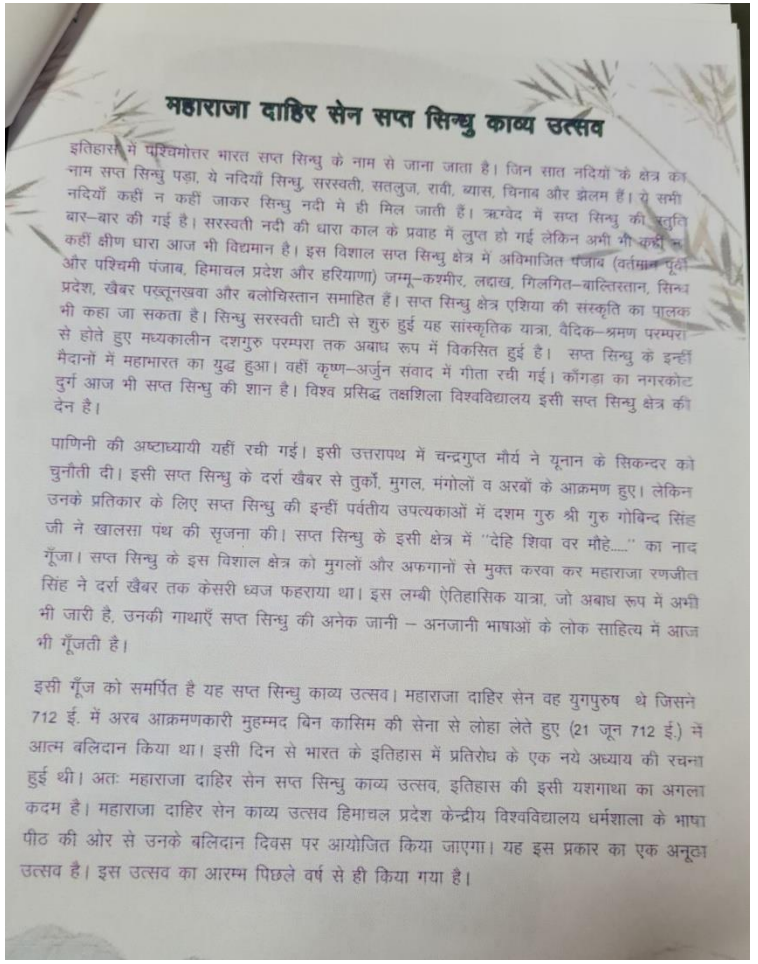

महाराजा दाहिर सेन सप्त सिन्धु काव्य उत्सव

इतिहास में पश्चिमोत्तर भारत सप्त सिन्धु के नाम से जाना जाता है। जिन सात नदियों के क्षेत्र का नाम सप्त सिन्धु पड़ा, ये नदियाँ सिन्धु, सरस्वती, सतलुज, रावी, ब्यास, चिनाब और झेलम हैं। ये सभी नदियाँ कहीं न कहीं जाकर सिन्धु नदी मे ही मिल जाती हैं। ऋग्वेद में सप्त सिन्धु की स्तुति बार–बार की गई है। सरस्वती नदी की धारा काल के प्रवाह में लुप्त हो गई लेकिन अभी भी कहीं न कहीं क्षीण धारा आज भी विद्यमान है। इस विशाल सप्त सिन्धु क्षेत्र में अविभाजित पंजाब (वर्तमान पूर्वी और पश्चिमी पंजाब, हिमाचल प्रदेश और हरियाणा) जम्मू–कश्मीर, लद्दाख, गिलगित–बाल्तिस्तान, सिन्ध प्रदेश, खैबर पख़्तूनख़्वा और बलोचिस्तान समाहित हैं। सप्त सिन्धु क्षेत्र एशिया की संस्कृति का पालक भी कहा जा सकता है। सिन्धु सरस्वती घाटी से शुरु हुई यह सांस्कृतिक यात्रा, वैदिक–श्रमण परम्परा से होते हुए मध्यकालीन दशगुरु परम्परा तक अबाध रूप में विकसित हुई है। सप्त सिन्धु के इन्हीं मैदानों में महाभारत का युद्ध हुआ। वहीं कृष्ण–अर्जुन संवाद में गीता रची गई। कॉंगड़ा का नगरकोट दुर्ग आज भी सप्त सिन्धु की शान है। विश्व प्रसिद्ध तक्षशिला विश्वविद्यालय इसी सप्त सिन्धु क्षेत्र की देन है।

पाणिनी की अष्टाध्यायी यहीं रची गई। इसी उत्तरापथ में चन्द्रगुप्त मौर्य ने यूनान के सिकन्दर को चुनौती दी। इसी सप्त सिन्धु के दर्रा खैबर से तुर्कों, मुगल, मंगोलों व अरबों के आक्रमण हुए। लेकिन उनके प्रतिकार के लिए सप्त सिन्धु की इन्हीं पर्वतीय उपत्यकाओं में दशम गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने खालसा पंथ की सृजना की। सप्त सिन्धु के इसी क्षेत्र में "देहि शिवा वर मौहे....." का नाद गूँजा। सप्त सिन्धु के इस विशाल क्षेत्र को मुगलों और अफगानों से मुक्त करवा कर महाराजा रणजीत सिंह ने दर्रा खैबर तक केसरी ध्वज फहराया था। इस लम्बी ऐतिहासिक यात्रा, जो अबाध रूप में अभी भी जारी है, उनकी गाथाएँ सप्त सिन्धु की अनेक जानी – अनजानी भाषाओं के लोक साहित्य में आज भी गूँजती है।

इसी गूँज को समर्पित है यह सप्त सिन्धु काव्य उत्सव। महाराजा दाहिर सेन वह युगपुरुष थे जिसने 712 ई. में अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम की सेना से लोहा लेते हुए (21 जून 712 ई.) में आत्म बलिदान किया था। इसी दिन से भारत के इतिहास में प्रतिरोध के एक नये अध्याय की रचना हुई थी। अतः महाराजा दाहिर सेन सप्त सिन्धु काव्य उत्सव, इतिहास की इसी यशगाथा का अगला कदम है। महाराजा दाहिर सेन काव्य उत्सव हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के भाषा पीठ की ओर से उनके बलिदान दिवस पर आयोजित किया जाएगा। यह इस प्रकार का एक अनूठा उत्सव है। इस उत्सव का आरम्भ पिछले वर्ष से ही किया गया है।

कार्यक्रम

पहला दिन (19 जून 2021)

समय : 5.00 से 7.00 सायंकाल

मुख्य अतिथि :

डॉ. रोशन लाल शर्मा
कुलपति
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

बीज भाषण :

प्रो. कपिल कपूर
पूर्व चांसलर
हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा

अध्यक्ष :

प्रो. हरेराम त्रिपाठी
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

विशेष अतिथि :

डॉ. सतनाम सिंह निज्जर
चेयरमैन
सरदार उत्तम सिंह निज्जर फाऊंडेशन

स्वागत : :

डॉ. बृहस्पति मिश्र
(प्रमुख भाषा संकाय)

संचालक :

डॉ. नरेश कुमार
(प्रभारी, पंजाबी और डोगरी विभाग)

दूसरा दिन (20 जून 2021)

समय : 5.00 से 7.00 सायंकाल

मुख्य अतिथि :

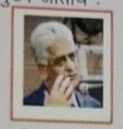

सुखी बाठ जी
(संस्थापक : पंजाब भवन, सरी, कैनेडा)

विशेष अतिथि :

डॉ. मनमोहन
(आई.पी.एस.)

काव्य प्रस्तुति :

परमिन्द्र सोढ़ी (जापान)
सुरिन्द्र गीत (कैनेडा)
सुखविन्द्र कंबोज (अमेरिका)
कुलविन्द्र (अमेरिका)
डॉ. वनीता (दिल्ली)
डॉ. बरिन्द्र कौर (मानसा)
जगदीप सिद्धु (मोहाली)
राज लाली (अमेरिका)
दलवीर दिल निज्जर (अमेरिका)
सुरजीत (कैनेडा)
डॉ. मोहन त्यागी
ठाकुर डॉ. इन्द्र सिंह (शिमला)
कुमार जगदेव सिंह (फरीदकोट)
दविन्द्र सैफी (फरीदकोट)

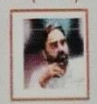

स्वागत :

डॉ. नरेश कुमार
प्रभारी
पंजाबी और डोगरी विभाग

धन्यावाद :

डॉ. नारायण सिंह राव
निदेशक
सप्त सिन्धु परिसर

संचालक :

डॉ. हरजिन्द्र सिंह
सहायक प्रोफ़ैसर
पंजाबी और डोगरी विभाग

तीसरा दिन (21 जून 2021)

समय : 5.00 से 7.00 सायंकाल

मुख्य अतिथि :

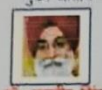

डॉ. जगबीर सिंह
कुलपति
पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय
भटिंडा

अध्यक्ष

श्री गुरभजन गिल

विशिष्ट अतिथि :

डॉ. सुगरा सदफ
निदेशक, अदारा, पंजाबी भाषा और संस्कृति, पाकिस्तान

माधव कौशिक
उपाध्यक्ष,
भारतीय साहित्य अकैडमी,
दिल्ली

काव्य प्रस्तुति :

डॉ. सरबजीत कौर सोहल
ताहिरा सरा (पाकिस्तान)
साफ़ीया हयात (पाकिस्तान)
पूरन अहसान (पठानकोट)
डॉ. पूनम द्विवेदी (पंचकूला)
नंदिता शर्मा (हि.प्र.)
त्रिलोचन लोची (लुधियाना)
योगिन्द्र पारस (सम्पादक शिराजा जम्मू)
मनजिन्द्र धनोवा (लुधियाना)
सरदार पंछी
बलराम शुक्ल
प्राकृतभाषा कवि
हीरा सिंह
संस्कृत कवि
प्रफुल्ल गडपाल
पालि भाषा कवि

स्वागतकर्ता

डॉ. नण्डूरी राजगोपाल
अध्यक्ष अंग्रेजी और हिन्दी विभाग

संचालक :

डॉ. ओम प्रकाश प्रजापति.
सहायक प्रोफ़ैसर, हिन्दी विभाग

धन्यवाद

डॉ. अरुण कुमार
(चेयर प्रोफ़ैसर, दीन दयाल उपाध्याय पीठ)

संयोजक :
पंजाबी और डोगरी विभाग
डॉ. नरेश कुमार, डॉ. हरजिन्द्र सिंह

आयोजन समिति :

अध्यक्ष : डॉ. बृहस्पति मिश्र
(प्रमुख भाषा संकाय)

डॉ. नारायण सिंह राव
निदेशक सप्त सिन्धु परिसर

डॉ. नण्डूरी राजगोपाल
अध्यक्ष अंग्रेजी और हिन्दी विभाग

meet.google.com/eok-kshw-rpa?authuser=0
Kiran Pahwa and 45 more
You
VIJAY SINGH wo
Kuldeep Agnihotri
Gurwinder Sandhu
pawan tibba
Prof. Jagbir Singh

Meeting details
Harjit Singh

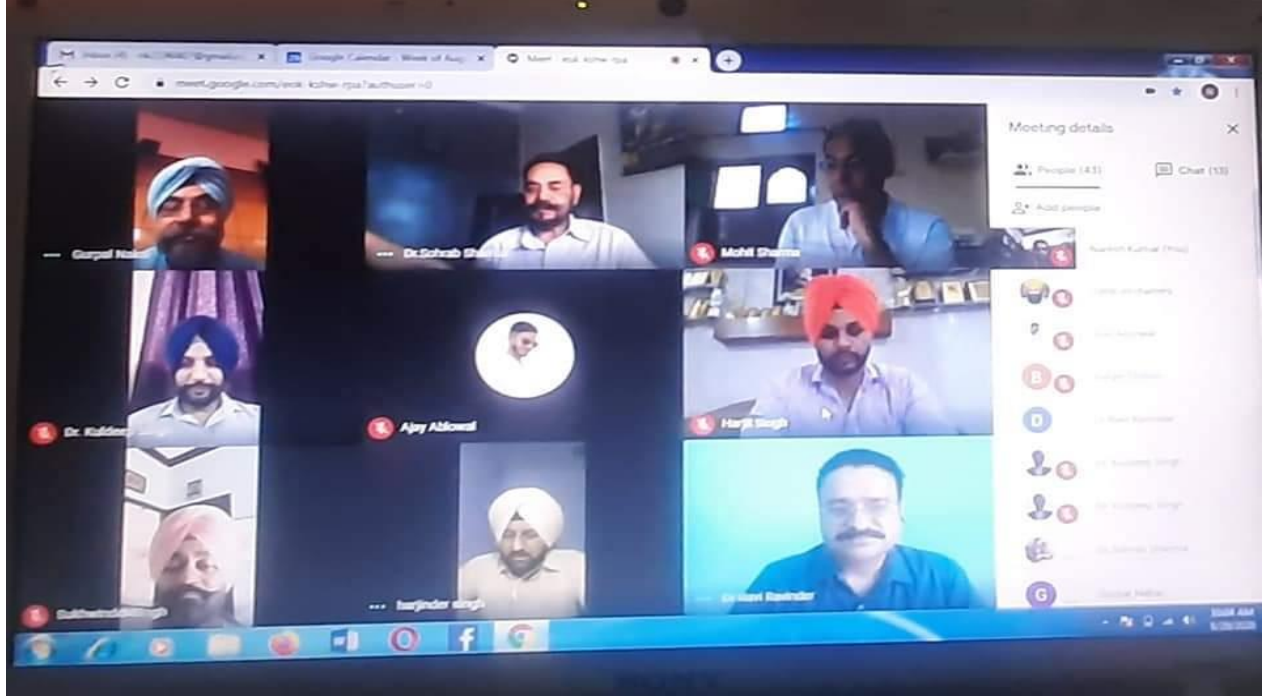

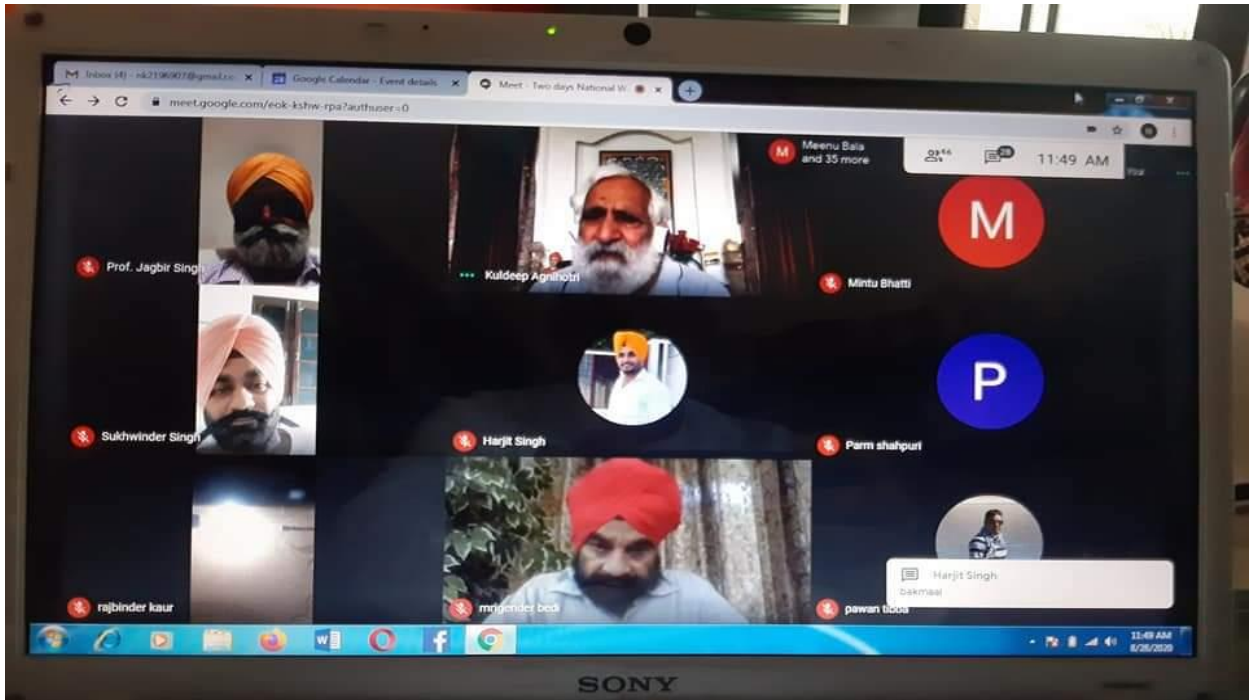

You
Dr. Kuldeep Singh
harjinder singh
Lovepreet kaur Lovepreet
jasveer kaur has left the meeting
rajbinder kaur
Kulwant Kaur

meet.google.com/eok-kshw-rpa?authuser=0
Meenu Bala and 35 more
11:49 AM
Prof. Jagbir Singh
Kuldeep Agnihotri
Mintu Bhatti
Sukhwinder Singh
Harjit Singh
Parm shahpuri
rajbinder kaur
SONY